

Dr. Rajiv Ranjan Pandey, Assistant Professor
Philosophy, RBR College, Monarajganj, Siwan
J. P. University, Chapra.

भारतीय दर्शन की विशेषता —

- ① जीवन के प्रति आध्यात्मिक दृष्टिकोण — भारतीय दृष्टिकोण जीवन के प्रति आध्यात्मिक है। सैकड़ों आक्रमण हुए, पर धर्म-आध्यात्म की नींव इतनी मजबूत रही कि हम बिखर नहीं पाये। भारतीय अध्यात्म से सत्य से असत्य को, पुण्य से पाप को, धर्म से अधर्म को रोकना है। भारतीय दर्शन एवं धर्म ऊँच लक्ष्य मोक्ष पुरुषार्थ की ओर अग्रसरित है।
- ② स्वतंत्रता — भारतीय दर्शन में परस्पर विचारों की स्वतंत्रता है - वह खण्डन करती हुई बढ़ती जरूर है। पर किसी विचार या वाद को नष्ट नहीं करती। या तो समाहित करती है या स्वतंत्र चुनाव का विकल्प दबोले रखती है। यहाँ आस्तिक - नास्तिक, चार्वीक विचारों का भी स्वतंत्र स्वागत है।
- ③ धार्मिकता — धर्म विहित समाज पशुवत व नरक तुल्य है। यह प्रेय, श्रेय, निःश्रेयस, आध्यात्म उन्नत जीवन, आदर्श, समाज निर्माणक आधार है। यह स्वयं की दुर्बल निवृत्ति एवं समाज को निःश्रेयस अग्रसारित करता है।
- ④ समन्वयात्मक दृष्टिकोण — दर्शन में आध्यात्म एवं भौतिक का संतुलन दिखता है। किसी वाद का खण्डन कर अवमानना की जगह समाहित समन्वयात्मक दृष्टिकोण अपनाता है। भारतीय दर्शन तमाम धर्म, पाश्चात्य विचारों से अपने आप में समाहित कर लेने का माहौल रखता है।
- ⑤ अतीत के प्रति आस्था — भारतीय दर्शन के लिए अतीत आस्था व विश्वास का विषय है। जितने भी पुनरवर्ती विचार हुए, उन्होंने पूर्ववर्ती विचारों का सम्मान करते हुए, अपने विचार को युगानुकूल बनाकर आगे का भोग्य प्रशस्त किया।
Ex- वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि

AUGUST '13

- (6) प्रगतिशीलता — प्राचीन से प्रेरणा लेकर युगानुगुल नवीन विचारों का स्वागत भारतीय दर्शन में सदा रहा है। चाहे वो अद्वैतवाद, द्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद, वेदान्त, शुद्धाद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, शक्ति, गणपत्य कोई क्यों न हो।
- (7) वैदिकता एवं मनोवैज्ञानिकता — भारतीय दर्शन में तत्त्व-विश्लेषण के लिए तर्क-वितर्क वैदिकता का सूचक है। 34 जीवन में उतार लेना नैतिकता के साथ मनोवैज्ञानिकता है। प्रातःजलि, योगसुत्र, मन एवं शरीर दोनों का उत्तम चिकित्सक है।
- (8) विश्व की नैतिक व्यवस्था में विश्वास — विवेक आधारित सामाजिक नियम एवं प्रकृति संचालित नैतिकनियम कृत एवं अपूर्व, दैव, अदृष्ट, कर्मविपाक में विश्वास करती है।
- (9) कर्मवाद में विश्वास — निष्कामकर्म, अनास्तकर्म, भीमांसक पंचकर्म, कर्मकांड, पंचक्रण आदि कर्मवाद में विश्वास के सूचक है।
- (10) पुनर्जन्म में विश्वास — चार्वाक को छोड़कर अन्य सभी दर्शन पुनर्जन्म में विश्वास रखता है। कर्म एवं कर्मफल की भी उचित व्याख्या है।
- (11) जीवन से निकटता — जीवन का लक्ष्य मोक्ष व दुःखनिवृत्ति है। मोक्षज्ञान को प्राप्त कर समाज में मोक्षज्ञान को प्रचारित कर जन समाज को भी लाभान्वित करना है। EX-गीता, बौद्धिस्त्वभादि।
- (12) आत्मा में अमरता एवं ईश्वर में विश्वास — वेद, उपनिषद्, स्मृति, श्रुति आत्मा की अमरता व ईश्वर में विश्वास करते हैं। तर्क के द्वारा विचारों को सही ढंग से समझकर अपने कर्मफल को ईश्वर में समर्पण करना विश्वास है।
- (13) मानवीय विश्वव्युत्पत्ति की भावना — 'वैशुधौव कुदुःखकर्म'; सर्व सुखिनः भवन्तु, निष्कामकर्म, अहम बह्मास्मि आदि मानवीय विश्वव्युत्पत्ति प्रमाण है।
- (14) आलोचनात्मक प्रवृत्ति — स्वस्थ आलोचन, समन्वय भारतीय दर्शन की सहिष्णुता है। EX- बौद्ध, जैन, वेद, उपनिषद् आदि।